

[विधि भारती परिषद् द्वारा आयोजित राष्ट्र विधि भारती सम्मान/पुरस्कार अर्पण समारोह
एवं 'महिला विधि भारती' पत्रिका के 54वें अंक के लोकार्पण समारोह,
में गुरुवार दिनांक 15.05.2008, स्पीकर हॉल, कान्स्टीट्यूशन क्लब, रफी मार्ग, नई दिल्ली में
न्यायमूर्ति श्री रमेश चन्द्र लाहोटी, पूर्व मुख्य न्यायाधीश, भारत का मुख्य अतिथि पद से दिया गया वक्तव्य]

सभा के अध्यक्ष महामहिम श्री चतुर्वेदीजी /
विधि भारती परिषद् की अध्यक्ष डॉ. सरोजिनी महिषीजी /
मेरे मित्र, बन्धु व मार्गदर्शक न्यायमूर्ति श्री शिवराज पाटिल /
बन्धु द्वय न्यायमूर्ति श्री अरविन्द सावन्त, श्री एस. एन. कपूर /
वे सभी मनीषी/विद्वषी जिनका सम्मान करने के लिए आज की यह सभा आयोजित है /
आदरणीय देवियों एवं सज्जनवृन्द /
सुश्री सन्तोषजी खन्ना एवं 'विधि भारती' परिवार के प्रिय सदस्यगण

हम आज विरोधाभासों के युग में जी रहे हैं। विज्ञान और तकनीक के क्षेत्र में, अभूतपूर्व प्रगति और उपलब्धियों के युग में ऐसा लगता है कि आध्यात्मिक जगत में हमारी यात्रा, जिस जगत की उपलब्धियों ने भारत को विश्वगुरु का ताज पहनाया था, कुछ ठहर सी गई हैं। एक विद्वान ने आज के विश्व और आज के वातावरण पर चुटकी लेते हुए कुछ कठोर सच्चाइयों से हमारा साक्षात्कार कराया है। लिखा है कि—

The paradox of our time in history is that;

We have taller buildings but shorter tempers;

Wider freeways, but narrower view points;

We have bigger houses and smaller families;

More conveniences but less time;

More knowledge but less judgment;

We have multiplied our possessions but reduced our values;

We have learned how to make a living, but not a life;

We have added years to life but not life to years

We have conquered outer space but not inner space;

We have done larger things but not better things

इन विसंगतियों के बीच विधि भारती जैसे संस्थायें, इस संस्था से जुड़ी और संस्था के लिए समर्पित डॉ. सरोजिनी महिषी, सुश्री सन्तोषजी खन्ना और अनेक वे जिनसे मेरा परिचय नहीं हुआ है, सभागार में उपस्थित वे सभी विभूतियां जिनका हमने अभिनन्दन किया, रेगिस्तान में नखलिस्तान या तेज गर्मी के मौसम में बासन्ती बयार के एक झोंके की अनुभूति कराते हैं।

जो कुछ हो रहा है उससे हम सभी पीड़ित हैं, चिन्तित हैं। मैं भी हूँ। आज के संस्कारविहीन वातावरण, पश्चिम के अन्धानुकरण, और निरी भौतिकवादिता के प्रभाव से मानव मूल्यों के हो रहे निरन्तर पतन से प्रसूत हताशा का आभास होते ही दुष्यंत कुमार की वे सुप्रसिद्ध पंक्तियां याद हो आती हैं—

इस सिरे से उस सिरे तक सब शरीके जुर्म हैं
आदमी या तो जमानत पर रिहा है या फरार।

अनीति, अन्याय, अत्याचार की खबरें समाचार पत्रों और दूरदर्शन पर प्रमुखता के साथ प्रसारित—प्रचारित होती हैं और उसी के साथ झलकती है उन लोगों की उपेक्षा अथवा विवशता का भाव, वे जो कुछ कर सकते हैं पर या तो करना नहीं चाहते या कर नहीं पाते। मैंने एक बार एक विद्वान सन्त से पूछा— इस नकारात्मक व्यवस्था से संघर्ष करके उसे अपास्त करने का कोई उपाय है? उन्होंने उत्तर दिया— ‘संघर्ष करने से तुम्हारी शक्ति और साधनों का अपव्यय होगा— लड़ाई लम्बी होगी। अच्छा तो यह है कि एक सुदृढ़ सकारात्मक व्यवस्था विकसित करो—ऐसी विशाल व्यवस्था कि जिसके आगे यह नकारात्मक निराशाजनक व्यवस्था बौनी पड़ जाए।’ स्वामी रामतीर्थ लाहौर के एक कॉलेज में प्राध्यापक थे। वे विद्यार्थियों को प्रतिदिन नई—नई शिक्षा अनूठे तरीके से देते थे। एक दिन उन्होंने बोर्ड पर एक लकीर खींची और छात्रों से कहा कि इस लकीर को बिना मिटाए छोटा कर दो। छात्रों ने बहुत दिमाग लगाया और हार मान ली। तब स्वामीजी ने उस लकीर के नीचे एक बड़ी लकीर खींच दी और कहा कि पहले वाली लकीर बिना मिटाए ही छोटी हो गई है। यह है सकारात्मक व्यवस्था।

दो मित्र आपस में चर्चा कर रहे थे। एक ने कहा कि मैं महान बनना चाहता हूँ। दूसरे ने पूछा— क्यों बनना चाहते हो? पहिला बोला— ताकि मुझ में श्रेष्ठ गुणों का आविर्भाव हो सके। दूसरा बोला— ‘कर्तव्यनिष्ठ रहो, अपने में श्रेष्ठ मानव मूल्यों का सृजन करो, इन गुणों का आविर्भाव हो गया तो महान तो अपने आप बन जाओगे।’ लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक एक सभा में भाषण दे रहे थे। तिलक जैसा प्रखर वक्ता और मंत्रमुग्ध श्रोता। भाषण समाप्त होने पर एक श्रोता ने पूछा— तिलक जी, आप ओजस्वी वक्ता हैं, प्रकांड विद्वान और कर्मनिष्ठ देशभक्त हैं। आपकी सफलता का राज क्या है? तिलक बोले— मैं निरन्तर ग्रन्थों का अध्ययन करता हूँ, देश में घटित होने वाले सारे घटनाक्रम पर नज़र रखता हूँ, समय व्यर्थ नहीं गंवाता और सदैव तनावमुक्त रहकर शक्ति के अनुसार परिश्रम और लगन से काम करता हूँ। यही मेरी सफलता का राज है।

जब कर्मनिष्ठता की बात आती है तो अंतिम मुगल बादशाह बहादुर शाह जफर का एक प्रेरक प्रसंग याद आता है। 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के दौरान अंग्रेजों ने उन्हें देशद्रोही करार देकर रंगून की एक जेल में भेज दिया था। एक बार किसी अंग्रेज परस्त ने उन्हें संदेशा भेजा—

दमदमें में दम नहीं, अब खैर मांगो जान की / ऐ जफर, अब हो चुकी शमशीर हिन्दुस्तान की।

जफर साहब रुग्ण थे। शैया पर लेटे रहते थे। पर उनकी सत्यनिष्ठा उनके हाँसले बुलन्द रखती थी। उस उस हालत में भी उन्होंने जवाब लिख भेजा—

हिन्दियों में बू रहेगी जब तलक ईमान की / तख्ते लन्दन तक चलेगी तेग हिन्दुस्तान की।

विधि भारती ऐसी ही एक सकारात्मक और सृजनात्मक पहल है। यह संस्था जिनका सम्मान कर रही है उनसे भी पहले मैं इस संस्था का अभिनन्दन करना चाहता हूँ। इससे कोई अन्तर नहीं पड़ता कि इस संस्था का आकार क्या है? कितनी क्षमता है? कितने साधन हैं? महत्व इस बात का है कि लक्ष्य कितना महान है, उद्देश्य कितने विशाल हैं? कृष्णबिहारी नूर की एक प्रसिद्ध गज़ल की पंक्तियां हैं—

*मैं एक कतरा ही सही मेरा वजूद तो है
हुआ करे जो समंदर मेरी तलाश में है*

वर्ष 1992 में स्थापित यह संस्था शनैः शनैः किन्तु ठोस कदमों से आगे बढ़ रही है। 1993 में संस्था का पंजीकरण। 1994 में 'महिला विधि भारती' के नाम से एक उत्कृष्ट, पठनीय, स्वस्थ सामग्री से भरपूर गरिमामय पत्रिका का प्रकाशन। 2001 में 'विधि भारती सम्मान' की स्थापना। दिनांक 12.05.08 को 'विधि भारती' की अध्यक्ष डॉ. सरोजिनी महिषी तथा 'महिला विधि भारती' की संपादक श्रीमती संतोष खन्ना शिष्टाचार भेंट और मुझे विधिवत आमंत्रित करने के लिए कृपा पूर्वक मेरे निवास स्थान पर पधारी थीं। उनके साथ बीता समय और वातालाप मेरे लिए यादगार बन गया है। मैंने उनसे पूछा कि विधि भारती सम्मान प्रदान करने के पीछे क्या अवधारणा है? वे कौन से मानदंड हैं अथवा कसौटी है जिनके आधार पर 'विधि भारती सम्मान' के अधिकारी पात्रों का चयन करती है। जो उत्तर उन्होंने दिया वह मेरे मानस पटल पर अंकित हो गया है। उन्होंने कहा कि यह सम्मान राष्ट्रीय छवि के ऐसे मनीषियों को प्रदान किया जाता है जिन्होंने निष्ठापूर्वक अपने कर्तव्य का संपादन करते हुए जीवन में उत्कृष्ट मानव मूल्यों की स्थापना की है; जो विवादों से सर्वथा परे रहे हैं और जिन्होंने विधि के क्षेत्र में असाधारण, रचनात्मक योगदान दिया है। यह तो हुए मुख्य मानक। उन्होंने बताया कि हम 'विधि भारती सम्मान' की गरिमा और महत्ता को अक्षुण्ण बनाए रखना चाहते हैं इस हेतु हम अपनी चयन प्रक्रिया को पूर्णतः निष्पक्ष और पारदर्शी रखते हैं। किसी भी प्रकार की राजनीति अथवा विवाद चयन की प्रक्रिया में दखल नहीं दे सकता। हम चुनते हैं व्यक्ति; पर ऐसे व्यक्ति जो अपने आप में एक संस्था होते हैं। एक बात और। चुने हुए व्यक्तियों में एक विभूति महिला होना अनिवार्य है। ऐसी अभिनव योजना और ऐसी निष्कलंक प्रक्रिया के विषय में जानकर हृदय आनन्द से अभिभूत हो गया।

आज मानवता पीड़ित हैं। अपनी व्यथा कहें भी तो किस से। इस वातावरण में 'विधि भारती' जैसी संस्था और आज के जैसे आयोजन देखता हूं तो मुझे एक शेर याद आता है जो है, तो हल्का फुल्का, पर जिसके सीने में दर्द छिपा है—

*मैंने खुदा से दुआ मांगी
दुआ में अपने लिये मौत मांगी
खुदा ने कहा— मौत तो मैं तुझे दे देता
पर उनका क्या करूं, जिनने
दुआ में तेरे लिये लम्बी उमर मांगी*

'विधि भारती' जैसी संस्थाएं और वे मनीषी जिनके व्यक्तित्व और कृतित्व का आज सम्मान हुआ है वे मानवता के लिए लम्बी उमर मांगते हैं और उन जैसों के कारण ही आज श्रेष्ठ मानवमूल्य अस्तित्व में है।

मैंने जानकारी चाही कि वे कौन-कौन हैं जो अब तक यह सम्मान पा चुके हैं। उन्होंने सम्मानित नामों का उल्लेख किया और याद दिलाया कि सन् 2004 में सम्मान समारोह की अध्यक्षता करते हुए स्वर्गीय डॉ. श्री लक्ष्मीमल सिंघवी ने सम्मानित होने वाली तीन विभूतियों को 'जीती जागती उत्सव मूर्ति' की संज्ञा से संबोधित किया था। डॉ. सिंघवी ने ठीक ही संज्ञा दी थी। इस सम्मान-समारोह के कार्यक्रम में उत्सव जैसा ही वातावरण होता है। डॉ. सिंघवी ने इस बात पर हार्दिक प्रसन्नता व्यक्त की थी कि उन उत्सव मूर्तियों का सम्मान करते हुए विधि भारती परिषद् भी गौरवान्वित हुआ है। वे 'उत्सव मूर्तियां' विधि के क्षेत्र से थीं। डॉ. सिंघवी ने कहा था कि उन तीनों विभूतियों ने न्याय, शिक्षा और संस्कार की रक्षा की है। आज की 'उत्सव मूर्तियों' को देखता हूं तो लगता है कि सम्मान का क्षेत्र कुछ विषद् हुआ है; केवल विधि के क्षेत्र तक सीमित नहीं रह गया है। आज सम्मानित होने वाली उत्सव मूर्तियों को देखकर मुझे यह प्रतीति होती है कि ये लोग वे हैं जिन्होंने अपने-अपने कर्तव्य

के प्रति न्याय किया है, निष्ठा रखी है, भारतीयता और भारतीयता से ओतप्रोत संस्कार और संस्कृति के असाधारण आदर्श स्थापित किए हैं।

What we call the secret of success and the secret of service is no more a secret; it is just our willingness to serve the humanity and put in our best to do that.

जिन मनीषियों और विद्वानों का हमने सम्मान किया है उनका प्रशस्ति वाचन भी हो चुका है। प्रत्येक प्रशस्ति संक्षिप्त किन्तु समग्र और केन्द्रित। एक अनुशासित वक्ता होने के नाते मुझे उनके विषय में अब कुछ नहीं कहना चाहिए किन्तु उनमें से जिनसे मेरी प्रत्यक्ष या परोक्ष निकटता रही है उनके विषय में एक-एक वाक्य कह पाने का लोभ संवरण करना मेरे लिए कठिन है।

न्यायमूर्ति श्री भगवती। उनका व्यक्तित्व एक व्यक्ति का नहीं अनेक संस्थाओं का सम्मिलित सुगठित स्वरूप है। मैंने उनके लिखे निर्णय पढ़े हैं। भारतीय दर्शन, गहन चिन्तन, विलक्षण प्रतिभा और अभिव्यक्ति का कौशल्य उनसे झलकता है। मैं तो यहां तक कहूंगा कि प्रातःकाल उनका लिखा कोई निर्णय पढ़ लिया जाए तो निर्णय में समाहित सामग्री के पाठ से वही शांति मिलती है जो किसी धर्मग्रन्थ का अध्याय पढ़ने से मिलती है। फरवरी 1994 में जब मध्यप्रदेश से स्थानांतरित होकर मैं दिल्ली उच्च न्यायालय में आया था तब तक न्यायमूर्ति लीलासेठ दिल्ली से जा चुकी थीं किन्तु उनकी उपलब्धियों की अनुगूँज उच्च न्यायालय के भवन में सुनाई देती थी। न्यायमूर्ति श्री बी. पी. जीवनरेड्डी के लिखे अनेक महत्वपूर्ण निर्णयों का मैं बड़े चाव से अध्ययन करता रहा हूँ। कोई भी विधि का विद्यार्थी उनके निर्णय 'पढ़' नहीं सकता, उनका 'अध्ययन' करना होता है। वे गंभीर होते हैं। न्यायमूर्ति श्री जीवन रेड्डी के सम्बन्ध में एक विशेष बात है कि जिस पीठ के वे सदस्य होते थे उसके सामने सुने गए किसी भी महत्वपूर्ण प्रकरण का निर्णय उन्हीं का लिखा हुआ होता था चाहे वे उस पीठ के वरिष्ठ सदस्य हों अथवा कनिष्ठ सदस्य। मैंने कुछ ऐसे जानकार सूत्रों से इसका रहस्य जानना चाहा जिनके नाम का उल्लेख मैं उनके सामने नहीं करूंगा। मुझे पता चला कि जब प्रकरण की सुनवाई कई दिनों तक चल रही होती थी तो जबकि अन्य न्यायाधीश महानुभाव निर्णय लिखना प्रारंभ करने के लिए सुनवाई समाप्त होने की प्रतीक्षा कर रहे होते थे वे प्रतिदिन अपना निर्णय लिखाते जाते थे और जैसे ही सुनवाई समाप्त होती थी और अन्य न्यायाधीश महानुभाव अपना निर्णय लेखन प्रारंभ करने का सोच रहे होते थे तब तक वे अपने निर्णय का प्रारूप सभी साथी न्यायाधीशगण को भेज दिया करते थे। मेरा परिचय प्रो. (श्रीमती) एस. के. वर्मा, से इंडियन लॉ इंस्टिट्यूट जैसी अखिल भारतीय महत्ता की संस्था की डायरेक्टर के रूप में हुआ था। एक ऐसे समय जबकि इंस्टिट्यूट नीचे की ओर सरक रहा था, कर्मचारियों को वेतन देने के लिए पैसे की कमी थी, तब वे डायरेक्टर नियुक्त हुई थीं। उन्होंने इंस्टिट्यूट के प्रवाह को मोड़ा, उसे 'डीम्ड यूनिवर्सिटी' का स्टेट्स दिलाया, अनेक नवीन पाठ्यक्रम प्रारंभ किए, इंस्टिट्यूट के अति महत्वपूर्ण प्रकाशन— ASIL (Annual Survey of Indian Law) को नियमित किया। जब उन्होंने इंस्टिट्यूट छोड़ा तब लाखों की रकम फिक्स्ड डिपॉजिट में थी। प्रो. (डॉ.) एम. एस. स्वामीनाथन के लिखे लेखों से कुछ अंश मैंने अपने निर्णयों में प्रतिपादित मत को संपुष्ट करने के लिए उद्धृत किये हैं। सुश्री अनुराधाजी मोहित से मेरा परिचय नहीं रहा है किन्तु आज ही विमोचित 'विधि भारती' के अंक 54 में उनके विषय में पढ़ा। वे अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति की महिला हैं और शारीरिक रूप से अथवा दृष्टि से बाधित लोगों के कल्याण के लिए उनका जीवन समर्पित है। 10 वर्ष की आयु से वे भी दृष्टि बाधित हैं। ईश्वर ने उन्हें चुनौती दी थी जिसे उन्होंने स्वीकार किया और कहा कि हे प्रभु! तेरी दी हुई चुनौती का सामना मैं तेरे ही दिए हुए सामर्थ्य, लगन और

कर्तव्य—निष्ठा से करूंगी। उनकी उपलब्धियों को देखकर कर एक जिज्ञासा उत्पन्न होती है कि उनकी नज़र कहां पड़ती है और कहां नहीं। वे कहती हुई सुनाई पड़ती हैं— *‘जिस दिन से मैं चली हूँ मंजिल पे नज़र है। आंखों ने कभी मील का पत्थर नहीं देखा।’* कृतित्व और कर्तव्य के पथ पर उनकी यात्रा में अनेक मील के पत्थर गुज़रे हैं और अनेक उन्होंने गाड़ दिये हैं।

आज डॉ. उषादेव की कहानी—संग्रह का विमोचन भी हुआ। पुस्तक को उन्होंने ने नाम दिया है— *‘क्या मैं गलत थी?’* मंच पर बैठे—बैठे मैंने पुस्तक को खोला तो संयोगवश पृष्ठ—14 खुला। उस पृष्ठ पर लिखी कहानी की पहिली पंक्ति है— *‘पुत्र कुपुत्र हो सकता है; पर माता कुमाता नहीं होती।’* डॉ. उषादेव को उनकी पुस्तक के मुख पृष्ठ पर पूछे गए प्रश्न का उत्तर देना चाहता हूँ— न वे गलत थीं और न वे गलत हैं।

ये विद्वान, ‘राष्ट्र भारती सम्मान’, ‘राष्ट्रीय विधि भारती पुस्तक पुरस्कार’ से सम्मानित सभी विद्वान तथा डॉ. उषादेव जिनकी पुस्तक का लोकार्पण हुआ, इन सबके व्यक्तित्व में एक बात समान है, एक सुनहरा तार है जो सभी के व्यक्तित्वों से होकर गुजरता है। वे सभी कर्तव्यनिष्ठ और स्थितप्रज्ञ रहे हैं। इनमें से प्रत्येक ने मानवमूल्यों की रक्षा भी की है और रचना भी। इन्हीं के लिये कहा गया है कि—

*दुनिया में वही शख्स¹ है ताज़ीम² के काबिल
जिस शख्स ने हालात का मुंह मोड़ दिया है*

या यूं कहूं कि—

*रहनुमा उसका हर नक्शे पा हो गया³
वह जिधर चल दिया रास्ता हो गया
उसने रौशन किया एक दिया राह में
दूर तक साफ यह सिलसिला हो गया।*

भारत के संविधान का अनुच्छेद 51 क प्रत्येक नागरिक के दस मौलिक कर्तव्यों की चर्चा करता है। अब ये 11 हो गये हैं। मुझे दसवां कर्तव्य अतिप्रिय लगता है। वह कहता है कि भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्तव्य होगा कि वह व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत प्रयास करे जिससे राष्ट्र निरंतर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊंचाईयों को छू लें। **(It shall be the duty of every citizen of India to strive towards excellence in all spheres of individual and collective activity so that the nation constantly rises to higher levels of endeavour and achievement.)** संविधान के इस अंश में गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर की एक सुप्रसिद्ध कविता की प्रतिध्वनि सुनाई देती है जहां उन्होंने लिखा है— **Where tireless striving stretches its arms towards perfection; ...where the mind is led forward by thee into ever-widening thought and action...** एक शायर भी अपने तरीके पर यही बात कहता है—

*मुसाफिर वो है जिसका हर कदम मंजिल की जानिब हो
मुसाफिर वो नहीं जो चल के थोड़ी दूर रुक जाए।*

¹ व्यक्ति

² इज्जत, सम्मान

³ His every footprint guides us on the path and leads us to the coveted destination

जो निष्ठापूर्वक अपने कर्तव्य का संपादन करते हैं और मूल्यों की रचना करते हैं, दैवी शक्ति उनका साथ देती है और एक कभी न थकने वाली जिजीविषा उनमें जाग्रत हो जाती है। रविन्द्रनाथ टैगोर की 'अशेष' में एक कविता का पद है:-

कांपिबे ना क्लान्तकर, भांगिबे न कण्ठस्वर
टुटिबे ना वीणा।
नवीन प्रभात लागी, दीर्घ रात्रि रबो जागि
दीप निभिबे ना।

थका हुआ भी मेरा हाथ न कांपेगा, मेरा गला न बैठ जायेगा, मेरी वीणा न टूटेगी, नवीन प्रभात के लिए तमाम रात मैं जागता रहूंगा, दीपक भी न बुझेगा। आपने मुझे धैर्यपूर्वक सुना इसके लिए आपका आभार। आज जो सम्मानित हुए हैं उन्हें सम्मानित करने का पुण्य कार्य मुझे संपादित करने का अवसर देकर आपने मेरा सम्मान बढ़ाया। इस हेतु आपका कृतज्ञ हूँ। आप सभी का अभिनन्दन। हम सभी एक नई दुनिया चाहते हैं एक बेहतर दुनिया। 'विधि भारती' जैसी संस्थाओं पर हमारी आशाएं और हमारी नज़रें टिकी हैं। आइए हम सब विधि भारती जैसी श्रेष्ठ संस्थाओं को सुदृढ़ बनाने का संकल्प लें क्योंकि-

*नई दुनिया बनाने को नये अंसर नहीं आते
यहीं मिट्टी संवरती है, यहीं ज़र्रे उभरते हैं।*

.....